Lecture 52

छत्रपति शिवाजी

Presented by- Mamta Rani
Guest Assistant Professor
SNSRKS COLLEGE, SAHARSA
Depart. of History.
BA PART- 3rd

शिवाजी का व्यक्तित्व :— [1627 - 1680]

शिवाजी का जन्म - 20 जनवरी 1627
जन्म स्थान - पूणा के समीप शिवनेर दुर्ग
पिता का नाम - शाहजी भोंसले
माँ का नाम - जीजाबाई
सौतेली माँ का नाम - तुकाबाई मोहिते
पुत्र का नाम - शम्भाजी
दादाजी का नाम - कोणदेव
राजनीतिक गुरु और संरक्षक का नाम - कोणदेव
धार्मिक गुरु का नाम - समर्थ रामदास
पत्नी का नाम - साँईबाई निम्बालकर

- शिवाजी का जन्म शिवनेर दुर्ग में हुआ था, जिसमें शिवनेरी देवी का मंदिर स्थित था, जिनके नाम पर इनका नाम शिवाजी रख दिया गया। इनके पिता शाहजी भोंसले पूणा के जागीदार थे और तुकाबाई मोहीते के साथ रहते थे, परिणामस्वरूप शिवाजी का अधिकांश बचपन अपनी माँ के साथ व्यतीत हुआ।
- शिवाजी का विवाह 1640 AD में हुआ था तब उनके पिता पूणा की जागीर शिवाजी को सौंप दिया और शिवाजी ने अपनी प्रारंभिक कार्यस्थली मावल प्रदेश को बनाया। इन्होंने शासक बनने के बाद दुर्ग जीतने का प्रयास शुरु किया।

शिवाजी के व्यक्तित्व पर सबसे अधिक प्रभाव माँ जीजाबाई का था, दूसरे व्यक्ति दादाजी थे।

- शिवाजी ने सर्वप्रथम 1645 में बीजापुर से तोरण का किला छीन लिया।
- 1648 में इन्होंने जावली का किला और 1656 में पुरंदर का किला को भी जीत लिया।
- जावली का किला सैन्य दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण था। शिवाजी ने तोरण किला से लगभग 5 km की दूरी पर रायगढ़ नामक किला का निर्माण कराया।
- शिवाजी ने रायगढ़ में अपनी राजधानी (1656) स्थापित किया।

शिवाजी ने अब अपने क्षेत्र का विस्तार करना शुरू किया, पड़ोसी राज्य के साथ-साथ मुगलो से भी संघर्ष हुआ तब सैन्य अभियान किया गया।।

— : सैन्य अभियान : -

⇒ **अफजल खाँ की हत्या (1659) : -**

शिवाजी ने बीजापुर से दुर्ग को छीन लिया था। बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ ने अभियान किया और इस क्रम में पण्ढरपुर में बिठोबा मंदिर को तोड़ दिया। इसने अपना दूत कृष्णजी भास्कर राव को शिवाजी के पास भेजा, मिलने षड़यंत्र के बारे में शिवाजी को बता दिया। परिणामस्वरूप 'पार' नामक स्थान पर शिवाजी ने अपने बघनखा से अफजल खाँ की हत्या कर दिया, यह बहुत बड़ी विजयी और शिवाजी मराठवाड़ा के क्षेत्र नायक बन गये।

⇒ शाईस्ता खाँ पर आक्रमण (1663) → यह औरंगजेब के मामा थे। इनके शिविर पर शिवाजी ने गुरिल्ला युद्ध पद्धति को अपनाते हुए आक्रमण कर दिया। शाईस्ता खाँ पराजित हुए तब औरंगजेब ने दक्षिण भारत से हटाकर बंगाल भेज दिया।

⇒ सूरत की लूट (1664) :- यह एक औद्योगिक नगर था, जिस पर मुगलों का नियंत्रण था। अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए शिवाजी ने सूरत को लूट लिया।

⇒ पुरंदर की संधि (1665) :- यह संधि शिवाजी और जयसिंह के बीच सम्पन्न हुआ। जयसिंह मुगलों की तरफ से संधि में शामिल हुए थे। इस संधि के अनुसार 23 किला शिवाजी ने मुगलों को दिया जिसकी आमदनी 4 लाख हूण था। 12 किला शिवाजी के पास सुरक्षित बच गया जिसकी आमदनी 1 लाख हूण था। इस संधि के द्वारा एक-दूसरे को सहायता देना, एक-दूसरे पर आक्रमण नहीं करना शामिल किया गया। साथ ही शम्भाजी को 5000 का मनसब भी दे दिया गया।

⇒ आगरा की यात्रा :- (1666) :- जयसिंह के अनुरोध पर शिवाजी ने आगरा की यात्रा किया। औरंगजेब ने राजदरबार में शिवाजी को भी 5000 का मनसब प्रदान कर दिया। अर्थात उनको भी पुत्र की श्रेणी में शामिल कर दिया। नाराज होकर शिवाजी ने औरंगजेब को विश्वासघाती, शब्द से संबोधित कर दिया। परिणाम-स्वरूप औरंगजेब को विश्वासघाती शब्द से संबोधित कर दिया। परिणामस्वरूप औरंगजेब ने शिवाजी को

उनके पुत्र शम्भाजी और उनके 4000 समर्थकों को गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया।
- शिवाजी और शम्भाजी दोनों को आगरा के जयपुर भवन में कैद कर दिया गया।

सूरत की दूसरा लूट (1670) -
आगरा से निकलकर शिवाजी ने 4 सालों में अपने खोये हुए सभी क्षेत्रों के साथ अन्य दुर्ग को भी जीत लिया और उसी क्रम में सूरत को दूसरा लूटा।
- शिवाजी को राजा की उपाधि औरंगजेब ने दिलवाया।

✡ राज्याभिषेक (1674) :-
शिवाजी ने अपनी राजधानी रायगढ़ में अपना राज्याभिषेक संपन्न कराया। काशी (बनारस) के प्रसिद्ध विद्वान पंडित गंगाभट्ट या विशेश्वर ने शिवाजी का राज्याभिषेक संपन्न कराया। इस अवसर पर शिवाजी ने कई उपाधि को धारण किया।
जैसे - छत्रपति, गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक, हैंव-धर्म उद्धारक, मराठा कुल-भूषण, मराठाकुल-वतंस।

⇒ शिवाजी कर्नाटक :- (1676) :-
यह शिवाजी का अंतिम सफल अभियान था। हैदराबाद के मदन्ना एवं अकन्ना नामक दो भाइयों के सहयोग से इनका अभियान सफल रहा।

1680 में शिवाजी की मृत्यु हुई तब छत्रपति के रूप में ~~शिवाजी~~ शम्भाजी को नियुक्त किया गया।